



# सोजे!



कहानी : प्रमोद पाठक



चित्र : कनिका नायर







अनु के पास रंग-बिरंगे मोज़े हैं।  
मम्मी को इनकी ज़रूरत होती है।







मम्मी इनका पोंछा जो बनाती है ।  
अनु को इनका पोंछा बनाना पसंद नहीं ।





अनु को अपने मोज़े बहुत प्यारे लगते हैं।  
मोज़ों से पैरों के रंग बदले जा सकते हैं।





लाल पैर चाहिए ।  
लाल मोज़े पहन लो ।

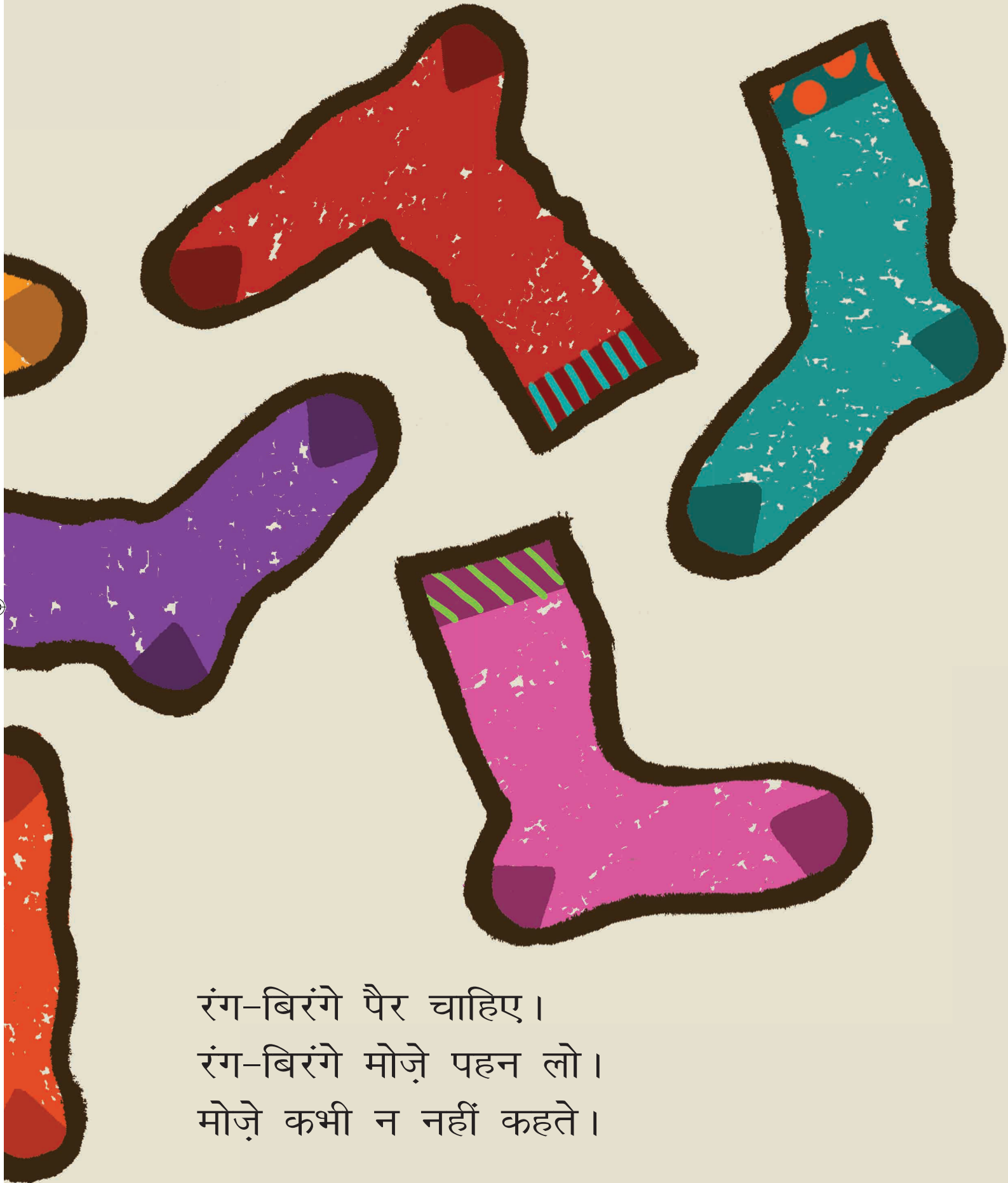




नीले पैर चाहिए ।  
नीले मोजे पहन लो ।







रंग-बिरंगे पैर चाहिए ।  
रंग-बिरंगे मोजे पहन लो ।  
मोजे कभी न नहीं कहते ।







एक दिन अनु ने गिलास  
को मोज़ा पहना दिया ।

फिर एक बैट को  
और एक गेंद को ।



अनु ने कहा- मम्मी गिलास लाल रंग का हो गया ।  
बैट नीला और गेंद रंग-बिरंगी हो गई ।

मम्मी ने कहा- ये बहुत प्यारे लग रहे हैं ।





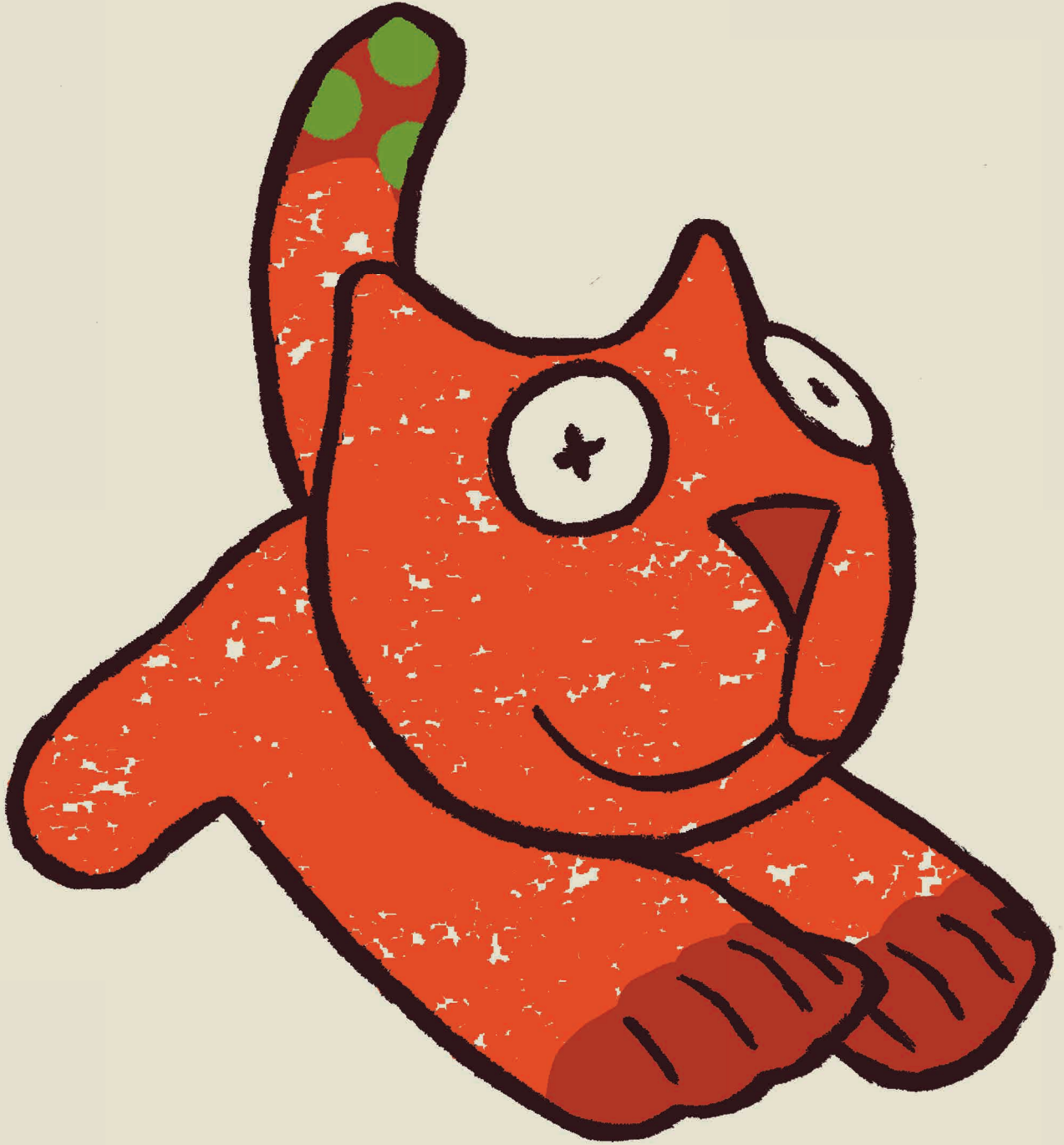


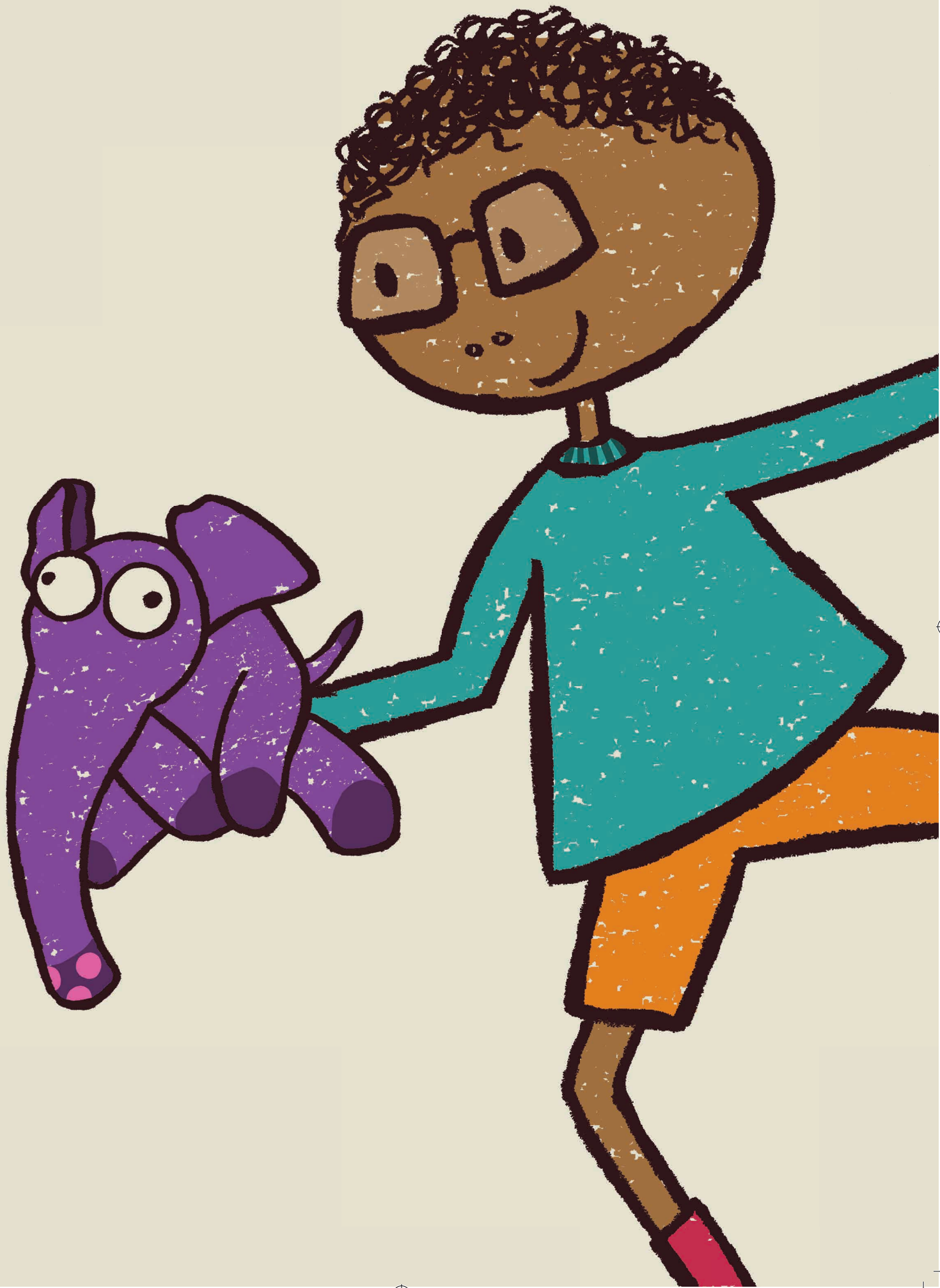
अगले दिन अनु ने देखा ।  
एक मौजे से हाथी बना हुआ है ।





एक मौजे से बिल्ली बनी हुई है।







उसने हाथी और बिल्ली को उठाया ।  
दौड़कर मम्मी के पास गई ।



वह मम्मी के गले से लिपट गई।





और पूछा- अब तो मोज़ों से  
पोँछा नहीं बनाओगी ?

मम्मी ने अनु को प्यार किया ।  
देर तक गले से लगाए रखा ।



